Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VIII, Issue No. XVI, Oct-2014, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

नारीवादी उपन्यासों में विद्रोही नारी

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VIII, Issue No. XVI, October-2014, ISSN 2230-7540

नारीवादी उपन्यासों में विद्रोही नारी

Amdavadia Maheshbhai Chimanlal

Research Scholar, Bhagwant University, Ajmer

----------X----------

परिचयः

नारीवादी आंदोलन जहाँ एक ओर स्त्री की दषा में सुधार लाया तो दूसरी ओर उसने आत्मसजग स्त्री को रूढ़ियों एवं रूग्ण परंपराओं का विरोधी भी बना दिया। वस्तुतः प्रस्तुत विरोध इस पहचान से उपजा था कि ये रूढ़ियाँ और रूग्ण परंपराएँ ही स्त्री के व्यक्तित्व–विकास के बाधक तत्व हैं। षिक्षित नारी को यह समझने में देर न लगी कि वर्तमान पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था के कारण ही समाज में स्त्री को दोयम दर्जे की स्थिति हासिल करनी पड़ी है। इस तरह की सामाजिक व्यवस्था के विरूद्ध नारीवादियों ने गहरा असंतोष प्रकट किया है और इस अंसतोष ने नारी को विद्रोही बना दिया। वास्तव में सामाजिक नियमों का आविष्कार मनुष्य की असत् वृत्तियों को नियंत्रण में रखकर उसे एक स्वस्थ जीवन बिताने के काबिल बनाने के उद्देष्य से किया गया था। किन्तु स्त्री के मामले में ये सामाजिक नियम की सबसे बड़ी बाधा सिद्ध हुई। जो व्यवस्था विष्व की आधी आबादी के साथ न्याय नहीं कर पायी, उसके विरूद्ध विद्रोह का होना अस्वाभाविक भी नहीं है।

समकालीन नारीवादी उपन्यासों में पितृसत्तात्मक समाज के नियम और रूढ़िग्रस्त परंपरा के विरूद्ध विद्रोह करनेवाली नारियों का चित्रण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इन उपन्यासों में चित्रित नारी अपने व्यक्तित्व–विकास के बाधक रूढियों एवं सामाजिक नियमों का खुलकर विरोध करती है। धार्मिक रूढियाँ स्त्री के व्यक्तित्व–विकास और स्वतंत्रता के लिए किस हद तक बाधक जाती हैं, इसका चित्रण समकालीन नारीवादी उपन्यासों में हुआ है। इन धार्मिक रूढ़ियों के खिलाफ विद्रोह समकालीन नारीवादी उपन्यास की एक प्रमुख प्रवृत्ति रही है। पुरूष द्वारा बनाए गए

सामाजिक नियम की नारी की अस्वतंत्रता का मूल कारण है। सामाजिक नियमों के गढन के समय जहाँ पुरूष अपने लिए विषेष अधिकारों को सुरक्षित रखते है, वहाँ नारी को अपने अधीन में रखने के लिए उस पर कड़े नियंत्रण की व्यवस्था भी करते हैं। समकालीन नारीवादी लेखिकाओं ने सामाजिक नियमों के अन दोहरे मापदण्डों के विरूद्ध अपना सख्त विद्रोह प्रकट किया है।

स्त्री किससे स्वतंत्रता चाहती है? इसका क्या स्वरूप है जैसे सवालों की चर्चा भी इस समय के उपन्यासों में हुई है। लेखिकाओं ने इस बात को स्पष्ट करने की कोषिष की है कि दीर्घ काल तक पुरूष के अधीन में रहने के कारण ही नारी का सहज विकास संभव न हो सका। किन्तु इस समय की लेखिकाओं की दृष्टि कोण पुरूष विद्वेष पर आधारित नहीं है। उपन्यासों में नारी द्वारा पुरूष के अनुकरण करने की प्रवृत्ति की आलोचना भी की गई है। अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए ठोस कदम उठाने वाली नारी का चित्रण इस समय के उपन्यासों की अनय विषेषता है। अपने व्यक्तित्व की स्थापना के लिए नारी द्वारा किए जाने वाले संघर्षों का चित्रण इस समय के सभी उपन्यासों में हुआ है। अपने सामाजिक सरोकार से पूरे समाज को प्रभावित करनेवाली नारियों का चित्रण भी इस समय के उपन्यासों में उपलब्ध है। कतिपय उपन्यासों में परिस्थिति के प्रति नारी की सजगता को भी चित्रित किया गया है। वस्तुतः यह नारी चेतना की व्यापकता का प्रमाण है। संक्षेप में, वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के विरूद्ध नारी द्वारा किए जाने वाला संघर्ष समकालीन नारीवादी उपन्यास का महत्वपूर्ण महलू है।

उपसंहारः

एक सामाजिक प्राणी हैसियत से स्त्री के मानवीय अधिकारों की माँग करता है नारी विमर्श। स्त्री को 'वस्तु' से 'व्यक्ति' में तब्दील करना नारी विमर्श का मुख्य लक्ष्य है। वह एक ऐसे समाज की कल्पना है जहाँ स्त्री पुरूष के अधीनस्थ न हों। वास्तव में नारी विमर्श स्त्री के स्वत्वबोध की पहचान की उपज है। पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था के स्त्री उत्पीडनकारी सिद्धांतों के खिलाफ विद्रोह इसकी पहली शर्त है। स्वतंत्रता और अस्मिता की रक्षा के लिए संघर्षरत नारियों को प्रश्रय देना नारी विमर्श का महत्तवपूर्ण उद्देश्य है। नारी के अधिकारों के प्रति नवीन चेतना का उदय पश्चिम में हुआ था। विश्व भर में नारी विमर्श एक संगठित आंदोलन का रूप 1950 के बाद ही ग्रहण करता है। 1960 तक आते आते हिन्दी साहित्य में भी इसका प्रभाव छा गया। नारी ने पहली बार अपनी चुप्पी को तोड़कर अपने अनुभवों को वाणी देना शुरू कर दिया। वास्तव में इस प्रवृत्ति ने प्रचलित साहित्यिक मान्यताओं की जड़ें हिला दीं।

हिन्दी साहित्य के आदिकाल और रीतिकाल में नारी का भोग्या रूप ही अधिक चित्रित था। भक्तिकाल में कबीर की नजर में वह साधना मार्ग की बाधा थी तो तुलसी की नजर में वह ताड़ना के अधिकारी थे। नवजागरण के प्रभाव के कारण यद्यपि लेखकों की दृष्टि में परिवर्तन आया किन्तु उस समय भी वह सहानुभूति के पात्र ही अधिक थी। एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में नारी को मानना करना इस समय के लेखकों के लिए संभव नहीं था। प्रेमचंद ने निश्चय ही अपने पूर्ववर्ती उपन्यासकारों से हटकर नारी जीवन को गौर से देखने का प्रयास किया था किन्तु वेश्या समस्या, विधवा समस्या, दहेज और अनमेल विवाह की समस्या जैसे कुछ विषयों तक ही उसका विचार सीमित रहा। इस समय की महिला लेखिकाओं द्वारा भी परंपरागत नारी संहिता को तोड़ने का कोई भी प्रयास दृष्टिगोचर नहीं होता। प्रमचंदोत्तर युग के उपन्यासों में स्त्री पुरूष संबंधों की नई व्याख्या हुई। इस समय के मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासकारों ने प्रेम, काम, दांपत्य

www.ignited.in

संबंधों में तनाव, विवाहेत्तर संबंध जैसे विषयों का विश्लेषण करने का प्रयास किया। स्वतंत्र एवं स्वेच्छाचारिणी नारियों का चित्रण इस समय के उपन्यासों में देखा जा सकता है। इस समय यशपाल जैसे मार्क्सवादी उपन्यासकारों ने परंपरागत नारी संहिता को आलोचना का विषय बनाया। इस समय की महिला लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में नारी शोषण के विभिन्न मुद्दों को अवश्य उठाया था किन्तु विद्रोह की ओर वे कुछ विमुख सी दिखाई देती हैं।

आजादी के बाद नारी शिक्षा का प्रसार नारी जीवन में नवीन चेतना लाया। साठोत्तर हिन्दी उपन्यासों में पश्चिम की नारी मुक्ति आंदोलन का प्रभाव उल्लेखनीय है। इस समय की महिला उपन्यास लेखिकाओं के विचार में प्रस्तुत नारी मुक्ति आंदोलन का स्पष्ट प्रभाव द्रष्टव्य है। अस्सी के बाद उपन्यास लेखन में महिलाओं की भागीदारी में बढ़ोतरी हुई। इस समय तक महिलाओं का जीवन क्षेत्र काफी विस्तृत हो चुका था। नारी शिक्षा के प्रचार नारी के सामाजिक जीवन में सुधार लाए। नारियाँ अपनी अस्मिता और अस्तित्व के प्रति अधिक सजग एवं संवेदनशील हो गईं। इस समय की लेखिकाओं ने नारी जीवन को उसकी पूरी समग्रता और व्यापकता के साथ परखने की कोशिश की है। वे परिवार और विवाह जैसी संस्थाओं की नई व्याख्या करना चाहती है। वे आज नैतिकता के नए–नए मापदण्डों के निर्धारण में जुड़ी हुई है। आज कामकाजी नारी के जीवन की समस्याओं के प्रति भी वे काफी सजग हैं। सामाजिक नियम और धार्मिक रूढ़ियों में निहित स्त्री विरूद्ध तत्वों से भी समकालीन नारीवादी लेखिकाएँ वाकिफ है। किन्तु वे अपनी पूर्ववर्ती लेखिकाओं की तरह शोषण के जिक्र मात्र से संतुष्ट नहीं हैं। शोषण के विरूद्ध सख्त विद्रोह आज इनके उपन्यासों की पहचान बन गई है। भूमण्डलीकरण, पारिस्थितिक सजगता जैसे विषय भी समकालीन नारीवादी लेखिकाओं के लिए अछूता नहीं है। संक्षेप में नारी जीवन से संबंधित सभी मुद्दों को इस समय की लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में दर्ज की है। बेशक नारीवादी उपन्यास समकालीन हिन्दी उपन्यास की महत्तवपूर्ण उपलब्धि है।

भारत की पारिवारिक व्यवस्था बिल्कुल पितृसत्तात्मक है। इस व्यवस्था के अंतर्गत एक ओरपरिवार के बाहर स्त्री के व्यक्तित्व की कल्पना के लिए कोई गुंजाईश नहीं है तो दूसरी ओर परिवार के अंतर्गत उसका स्थान कैदी के समान है। समकालीन नारीवादी लेखिकाओं ने भारतीय परिवारों की इस स्त्री उत्पीड़नकारी रूप का पर्दाफाश किया है। वास्तविकता यह है कि भारतीय परिवारों के ढाँचे में ऐसी औरतों का ही निर्माण होता है, जो बोलना नहीं जानती, अगर कुछ जानती हैं तो सिर्फ इतना कि पुरूषों की आज्ञाओं की पालन। उस पर अनुशासन की कड़ी निगाह, उठने–बैठने की विशेष शिक्षा, समय–समय पर लड़की होने का अहसास दिलाना इन सबके परिणामस्वरूप उसके व्यक्तित्व के विकास संभव नहीं हो पाता। इसी परिवार में लड़का अपने विशेष अधिकार के हकदार भी है। सभी क्षेत्रों में यह भेदभाव आज भी बरकरार है। भारतीय परिवारों में वैदिक काल से ही पुरूष संतानों के प्रति विशेष मोह देखा जा सकता है। आज भी इस मोह से वे मुक्त नहीं हुए हैं। इसका भीषण रूप आज कन्याभ्रूण हत्याओं के मामलों में देखा जा सकता है। पिछले कुछ सालों के आँकड़ों के मुताबिक भारत में पुरूषों पर स्त्री का अनुपात लगातार घटता जा रहा है जो चिन्तनीय है।

आज भी एक भारतीय स्त्री के लिए ऐसे एक घर की कल्पना संभव नहीं है। जिसे वह अपना कह सके। घर तो पुरूषों दका ही है। पुरूष की नजर में स्त्री जीवन का चरम लक्ष्य विवाह है। किन्तु विवाह के मामले में भी चयन के अधिकार से वह वंचित है। नारी की इस बदली हुई मानसिकता भी उल्लेखनीय है कि आज वह विवाह को अपने जीवन की अनिवार्य घटना के रूप में देखने को तैयार नहीं है। आजीवन अविवाहिता रहने के लिए भी वह तैयार है, शादी और प्रेम आज उसके लिए पर्यायवाची शब्द नहीं है। औसत पुरूष की नजर में आज भी औरत गृहस्थी सँभालने की नौकरानी और भोगने की वस्तु मात्र है। आज तलाक के प्रति नारी की नई सोच विकसित हुई है। मरे हुए संबंधों को ढोने के लिए आज वह तैयार नहीं है। अनुचित समझौतों के लिए भी वह तैयार नहीं है। किन्तु तलाकशुदा स्त्री को समाज आज भी शक भरी दृष्टि से ही देखता है। समकालीन नारीवादी लेखिकाओं के विचार में विश्व के सभी समाज नारी उत्पीड़कारी ही है। वास्तव में नारी शोषण के मामले में विश्व के विभिन्न समाजों के बीच कोई खास अंतर नहीं है।

समकालीन नारीवादी लेखिकाओं के उपन्यासों में काम संबंधी अवधारणाओं में पर्याप्त नवीनता देखने को मिलती है। वे पुरूष लेखकों द्वारा निर्धारित काम संबंधी मान्यताओं का अनुसरण करने के बजाय एक नया रास्ता खोज निकालना चाहती है। काम या सेक्स उनके लिए कोई वर्जित वस्तु नहीं है। पुरूष द्वारा निर्धारित नैतिकता की अवधारणा की इन लेखिकाओं ने धज्जियाँ उठाई हैं। नैतिकता के मामले में पुरूष विशेष अधिकार का हकदार है। नैतिकता के इन दोहरे मापदण्डों के विरूद्ध आक्रोश इनके उपन्यासों की अभिन्न अंग है। पुरूष द्वारा लादी गई मान्यताओं को पालने के लिए आज की नारी विवश नहीं है। वे समाजगत नैतिकता की तुलना में व्यक्तिगत नैतिकता को महत्तव देती है। साहित्य के क्षेत्र में भी पुरूष द्वारा निर्धारित नैतिक मान्यताओं का उल्लंघन करने की लेखिकाओं की चाह भी प्रस्ताव है। स्त्री पुरूष मिलन के उन्मुक्त चित्रण इनके उपन्यासों में देखा जा सकता है। जिसका मुख्य उद्देश्य पुरूषद्वारा निर्धारित साहित्यिक मान्यता को चुनौती देना है।

संदर्भ ग्रंथ सूचिः

1. नवजागरण और महादेवी वर्मा का कृष्णादत्त पालीवाल किताब घर, नई दिल्ली संस्करण – 2008 रचना कर्म स्त्री विमर्श के स्वर
2. नयी सदी के उपन्यास डॉ. नवीनचंद्र लोहनी भावना प्रकाशन, दिल्ली संस्करण – 2004
3. स्त्री और पराधीनता जॉन स्टुअर्ट मिल–अनु: युगांक धीरसंवाद प्रकाशन, मुम्बई संस्करण – 2002
4. समकालीन महिला लेखन डॉ. ओमप्रकाश शर्मा पूजा प्रकाशन, दिल्ली संस्करण – 2002
5. ज्ञान का स्त्रीवाद पाठ सुधा सिंह ग्रंथ शिल्पी प्रा. लिमिटेड– दिल्ली संस्करण – 2008
6. न्यायक्षेत्रेः अन्यायक्षेत्रे अरविंद जैन राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2002
7. जहाँ औरतें गढ़ी जाती हैं मृणाल पाण्डे राधकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2006
8. आधी आबादी का संघर्ष ममता जैतली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2006 श्री प्रकाश शर्मा

9. विद्रोही नारी जर्मेन ग्रियर– राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2001 अनुः मधु बी जोशी

10. नारी :बहुरूपा डॉ. उर्मी शर्मा अनंग प्रकाशन, दिल्ली संस्करण – 2002

11. परिधी पर स्त्री मृणाल पाण्डे राधकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 1998

12. मात्र देह नहीं है औरत दुला सिन्हा सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2007

13. प्रेम के साथ पिटाई लवलीन सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2007

14. ..... और औरत अंग मनीषा शिल्पायन, दिल्ली संस्करण – 2006

15. बन्द गलियों के विरूद्ध मृणाल पाण्डे राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2004 महिला पत्रकारिता की यात्रा क्षमा शर्मा

16. औरत अपने लिए लता शर्मा सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2006

17. स्त्रीत्व का उत्सव राजकिशोर वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2003

18. स्त्री देह की राजनीति से मृणाल पाण्डे राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2002 देह की राजनीति तक

19. भारतीय विवाह संस्था का इतिहास विश्वनाथ काशीनाथ वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2004

20. ओ उब्बीरी..... मृणाल पाण्डे राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2006

21. बाधाओं के बावजूद नई औरत उषा महाजन मेधा बुक्स, दिल्ली संस्करण – 2001

22. औरत कल, आज और कल आशारानी व्होरा कल्याणी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली संस्करण – 2005

23. जीना है तो लड़ना होगा बृंदा कारात सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2007

24. नारी प्रश्न सरला सचदेवा राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2007

25. हमारी औरतें मनीषा शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2006

26. जीवन की तनी डोरःये स्त्रियाँ नीलम कुलश्रेष्ठ मेधा बुक्स –नई दिल्ली संस्करण – 2002

27. देवी– समयातीत गाथाएँ स्त्रियों की मृणाल पाण्ड राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2001

28. स्त्री संघर्ष का इतिहास 1800–1990 राधा कुमार – अनुवाद वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2002

29. लिंग भाव का मानवैज्ञानिक लीला दुबे – अनुः वंदना मिश्र वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2004

30. स्त्री पुरूष कुछ पुनर्विचार राजकिशोर वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2000

31. बधिया स्त्री जर्मेन ग्रियर – राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2005

32. अपना कमरा वर्जीनिया वुल्फ – सवांद प्रकाशन, मुंबई संस्करण – 2002

33. स्त्री लेखन और समय के सरोकार हेमलता महिश्वर नेहा प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2006

34. हव्वा की बेटी दिव्या जैन वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर संस्करण – 2000

35. औरत : उत्तर कथा संपादन – राजेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2002

36. हिन्दी की महिला उपन्यासकारा डॉ. उषा यादव राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 1999

37. हिन्दी उपन्यास पर पाश्चात्य प्रभाव भारत भूषण अग्रवाल किताबघर, नई दिल्ली संस्करण – 2001

38. प्रेमचंद – पूर्व के हिन्दी उपन्यास ज्ञानचंद जैन आर्य प्रकाशन मंडल, दिल्ली संस्करण – 1998

39. मूल्य और हिन्दी उपन्यास डॉ. हेमराज कौशिक निर्मल पब्लिकेशन, दिल्ली संस्करण – 2000

40. हिन्दी उपन्यासों में बौद्धिक विमर्श डॉ. गरिमा श्रीवास्तव संजय प्रकाशन, दिल्ली संस्करण – 1999

41. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में युग बोध डॉ. लालसाहब सिंह अभय प्रकाशन, कानपुर संस्करण – 2005

42. हिन्दी उपन्यास सृजन और सिद्धांत नरेंद्र कोहली वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2002

43. उपन्यास की समकालीनता ज्योतिष जोशी भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली संस्करण – 2007

44. बाजार के बीचः बाजार के खिलाफ प्रभा खेतान आणी प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2007

45. स्त्री आकांक्षा के मानचित्र गीता श्री सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2008

www.ignited.in